ⓒ ~~Write the essay on the Rathas Mahabalipuram~~ / अर्थ –

Part II Hons
P. III

महाबलिपुरम (रथ) स्थापत्य कला पर प्रकाश डाले ?

Ans

दक्षिणी भारत के सांस्कृतिक प्रवाह के साथ स्थापत्य कला का घनिष्ठतम संबंध माना जाता है। उस भाग में स्थापत्य कृतियों पर बाहरी आक्रमण का प्रभाव न पड सका। अतएव दक्षिण भारत के मंदिर भारतीय वस्तु कला का गौरव भरा इतिहास प्रस्तुत करते हैं। दक्षिण के हजारों मंदिर सुरक्षित हैं तथा भारतीय स्थापत्य के सुन्दर नमूने हैं।

सातवीं सदी के आरंभ में जिस स्थापत्य कला का प्रादुर्भाव हुआ वह प्रस्तर चट्टानों को खोदकर तैयार हुए। इन खोदी हुई इमारतों को रथ कहा जाता है। चूंकि महेन्द्र के उत्तराधिकारी नरसिंह वर्मन पल्लव नरेश की पदवी महामल्ल थी। अतः रथों का महामल्ल स्थापत्य वर्ग में भी रखा जाता है। सौ वर्षों (६० – ६९० ई०) में सारा कार्य सम्पन्न हुआ। इस अवधि में दो प्रकार की स्थापत्य शैलीयां प्रचलित हुई। जो आगे चलकर एक साथ मिल गई। महामल्ल उपाधि के कारण समुद्र किनारे पर स्थापित नगर मद्रास से 60 कि० मी० दूर स्थित है। जहां आरंभ में दो रीतियों का प्रचलन रहा मंडप तथा रथ।

महामल्ल वर्ग की दूसरी अवस्था में रथ को स्थान दिया गया है। नरसिंह वर्मन (ई० स० 640 – 668) इस स्थापत्य कला का संरक्षक था। इसके शासन अवधि में मंडप के साथ रथ की प्रधानता थी। समुद्र किनारे महाबलिपुरम में दोनों अवस्थाओं का स्थापत्य उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं। यह नगर पल्लव राजधानी कांचीपुरम का बन्दरगाह था। जहां से दक्षिण भारत के शासकों ने एशिया के पूर्वी द्वीप समूह पर आक्रमण किया था। पल्लव स्थापत्य शैली का विस्तार भी इसी मार्ग से बृहत्तर भारत में हुआ। महाबलिपुरम के समुद्र के किनारे इमारतें कड़े प्रस्तर का पर्वत है। जो उत्तर

Scanned with CamScanner

दक्षिण तक विस्तृत है। यह आधा मिल लम्बा चौथाई मील चौड़ा तथा सौ फुट चौड़ा तथा सौ फुट ऊंचा था। इस स्थान का प्रस्तर गढ़ा होते हुए भी समुद्री हवा के कारण नष्ट होता जा रहा है। समुद्र के किनारे की इमारतें प्राचीन कही जाती है किन्तु इसका मूल आकार नष्ट हो गया है।

महेन्द्र शैली की दूसरी अवस्था (Phase) में रथों का निर्माण हुआ। इनको बालू के भीत (किस उद्देश्य से खोदा गया था यह एक रहस्य मय है।) सभी रथ अकेला बिना लक्ष्य के खड़े हैं। जिसका अंदरूनी खुदाई रूप आसमान है। इससे मंदिर निर्माण में कितना प्रोत्साहन मिला होगा यह अनुमान सा है। रथ की ऐसी बनावट इमारतों का रहस्यमय कल्पना थी। जिसे अभी तक गुम्बद समझते हैं।

महाबलि पुरम के रथ अकेले विशाल चट्टान से निर्मित नहीं क्योंकि इनमें कुछ फल सीमित था। ये 42 फुट लम्बे, 35 फुट चौड़े तथा 40 फुट ऊंचे आकार में हैं। इनकी संख्या सात होने से सात पगोडा (Seven Pagoda) के नाम से विख्यात है। ब्राउन का मत है कि दोनों बौद्ध मठ तथा चैत्य मंडप के अनुकरण पर तैयार हुए हैं। सात पगोडा निम्नलिखित हैं — (i) द्रौपदी रथ (ii) अर्जुन रथ (iii) धर्मराज रथ (iv) नकुल सहदेव रथ (v) भीम रथ (vi) गणेश रथ (vii) किनारे का मंदिर

द्रौपदी रथ सबसे छोटा है, सादा यानी अलंकरण रहित है तथा पूर्णतया खड़ा हुआ है। एकादश रथों का स्थापत्य प्राचीन बौद्ध विहारों पर आधारित होने के कारण चकोर या आयात का है। ब्राउन ने इसका उल्लेख विहार रथ रूप में किया है। संभवतः वर्गाकार आंगन में स्थित कोठरी के स्वरूप से रथ का विकास हुआ

ऊँचाई में ये पिरामिड या गोली के आकार के
हैं। प्रायः सभी रथ दो मंजिल के हैं।
प्रत्येक छत पर उन्नतोदर (convex) रूप में
कार्निस दिख पड़ती है जिसे चैत्य वातायन
सदृश मेहराब से अलंकृत किया गया है
दक्षिणी भारत में इसे (कूडु) कहते हैं। रथ
की नीचली दिवार में भित्ति स्तंभ बने हैं
तथा ऊपरी मंजिल छोटे मंडप सहित हैं।
नकुल सहदेव रथ योजना में चौकोर तथा
कुछ आयात कार रथ भी बने हुए हैं।
सभी रथों की परिकल्पना एक सी नहीं है।
ऊपरी भाग में गुम्बज को स्तूपी स्तूपिक
या स्तूपिक कहते हैं। गुम्बज मेहराबी आकार
के भी हैं। इसी को ध्यान में रखकर
मूलतः द्राविड शैली का दो प्रकार -
(i) मीनार सहित विमान (ii) विशाल मार्ग का
गोपुरम विकसित हुए थे।

धर्मराज रथ वर्गाकार
है और सम्भवतः इसी से द्रविड विमान का
प्रादुर्भाव हुआ। इसमें जमीन की सतह का
कक्ष वर्गाकार है। जिसके चारों तरफ स्तंभ
सहित खुला बरामदा है। इसी आकार प्रकार
के ऊपरी भाग में गुम्बज है जो मुंडा का
है (स्तंभाकार प्रस्तर स्तंभ) जो क्रमशः ऊपरी
भाग में पतला होता चला गया तथा जिसके
सिरे पर (टोपी की तरह) गोल अष्टकोण स्तूपिका
दिख पड़ती है प्रत्येक मंजिल दूसरी से पृथक है
उनमें उन्नताकार चैत्य नुमा मेहराब (कूडु) बने हुए हैं
देखने से पता चलता है कि उपरी
मंजिल गर्भगृह का काम करती है तथा नीचे का
बरामदा प्रदक्षिणा मार्ग प्रकट होता है इस प्रकार
धर्मराज रथ तो विशिष्ट तौर पर द्रविड
विमान का रूप उपस्थित करता है। गणेश रथ
चौकोर होकर आकर्षक तथा दिलचस्प है।
ऊपर मंजिल का सिर गोली के आकार
सदृश शाव कक्ष से ढका है। इसमें छोटे
पेमाने पर गोपुरम का आकार अपने

Scanned with CamScanner

विशेषता के लिए बनाई गई है। चकोर योजना में प्रवेश द्वार उपयुक्त माना जाता है। और गोपी के आकार का रूप भी उपयोगी सिद्ध होती है। महाबलिपुरम के कर्णिका तथा चकोर प्रकार के रथ साथ साथ विद्यमान है। जिनकी स्वतंत्र कल्पना ज्ञात होती है।

विद्वानों का मत है कि द्रविड़ शैली के प्रमुख तत्वों का मूल मामल्लपुर के रथों में निहित है। राजसिंह (पल्लव) शैली में प्रस्तर चुनकर निर्मित इमारतें कांची पुरम का कैलाश नाथ मंदिर विशेष ~~निर्मित इमारतें~~ में विशेष उल्लेखनीय है। इसमें द्रविड़ शैली की सभी विशेषताएं सुव्यवस्थित ढंग से व्यक्त की गई है। राजसिंह पल्लव के महाबलि पुरम के समुद्र तट के मंदिर तत्पश्चात कांची के कैलाश नाथ मंदिर का निर्माण कराया। इस तरह दक्षिणी भारत के इतिहास में महाबलि पुरम का रथ चिर स्मरणीय है। इससे सांस्कृतिक प्रवाह का भी परिज्ञान होता है।

The end